सीरियल न0 (5)

हज़रत
मुहम्मद
सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम
की पाक ज़िन्दगी

लेखक

मौलाना सैयद अबुलहसन अली हसनी नदवी

नाशिर

शोबा–ए–दावत–व–इरशाद

नदवतुल उलमा, पो0 बा0 93, लखनऊ

www.abulhasanalinadwi.org

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

हज़रत मुहम्मद

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पाक ज़िन्दगी

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मुतअ़ल्लिक आपके सहाबी हज़रत हिन्द इब्ने अबी हाला ने बेहतरीन अलफाज़ में इस प्रकार बयान फरमाया है :–

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हर समय आख़िरत की सोच में रहते थे। अक्सर देर तक ख़ामोश रहते, बिना ज़रूरत न बोलते। बात चीत शुरू करते तो शब्दों को पूरा पूरा अदा करते और इसी प्रकार बात समाप्त करते। आप की बात चीत और बयान बहुत साफ़ और दो टूक होता, बात चीत न बे ज़रूरत लम्बी होती न बहुत मुख़्तसर। आप नर्म मिज़ाज थे और नर्म बात करने वाले थे। सख़्त मिज़ाज और बेमुरूव्वत न थे। न किसी को अपमानित करते और न अपने लिए अपमान पसन्द करते। नेअ़मत की बड़ी क़द्र करते और उसको बहुत ज़्यादा जानते चाहे कितनी ही थोड़ी हो और उसकी बुराई न फ़रमाते। खाने पीने की चीज़ों की न बुराई करते न तअ़रीफ़। दुन्या और दुन्या से सम्बन्धित जो भी चीज़ हो तो उस पर कभी आप को गुस्सा न आता। लेकिन जब ख़ुदा के किसी हक़ को दबाया जाता तो उस समय आप के जलाल के सामने कोई चीज़ ठहर न सकती थी यहाँ तक कि उस का बदला ले लेते। आप को अपने लिए न गुस्सा आता न उस के लिए बदला लेते। जब इशारा फ़रमाते तो पूरे हाथ के साथ इशारा फ़रमाते। जब किसी बात पर तअ़ज्जुब फ़रमाते तो हाथ को पलटते। बात करते समय दाहिने हाथ की हथेली को

www.abulhasanalinadwi.org

बाएं हाथ के अंगूठे से मिलाते। गुस्से और नागवारी की बात होती तो उस तरफ़ से मुँह फेर लेते। खुश होते तो नज़रें झुका लेते। आपका हँसना ज़्यादा तर तबस्सुम (मुस्कराहट) था जिस से सिर्फ आप के दाँत जो बारिश के ओलों की तरह साफ, निर्मल व चमकदार थे, दिखाई देते।"

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अन्हु जो आप के परिवार के एक व्यक्ति थे ने आप को बहुत क़रीब से देखा था, और उन्हें आप (स0) को जानने के बेहतरीन मौक़े हासिल थे, मानव–प्रवृत्ति तथा आचरण की बारीकियों पर उन की गहरी नज़र थी, साथ ही चरित्र चित्रण पर उन को अच्छी कुदरत थी। वह आपके "महान चरित्र" और अख्लाक़ के बारे में कहते हैं :–

"आप स्वभाव से बद कलामी और बेहयाई और बेशर्मी से दूर थे, बाज़ारों में आप कभी आवाज़ बुलन्द न फ़रमाते, बुराई का बदला बुराई से न देते बल्कि क्षमा कर देते, आप ने कभी किसी पर हाथ न उठाया सिवाए इसके कि अल्लाह के रास्ते में जिहाद का मौक़ा हो। किसी नौकर या औरत पर आप ने कभी हाथ नहीं उठाया। मैं ने आप को किसी ज़ुल्म व ज़्यादती का बदला लेते नहीं देखा, जब तक कि अल्लाह की निर्धारित सीमाओं की खिलाफ़ वर्ज़ी न हो और उसकी हुरमत (इज़्ज़त) पर आँच न आए, हाँ ! अगर अल्लाह के किसी हुक्म को पामाल किया जाता और उसके गौरव पर आँच आती तो आप उसके लिए हर व्यक्ति से अधिक गुस्सा होते। दो चीज़ें सामने होतीं तो हमेशा आसान चीज़ को चुनते। जब अपने घर आते तो आ़म इंसानों की तरह नज़र आते। अपने कपड़ों को साफ़ करते, बकरी का दूध दुहते और अपनी सब ज़रूरतें खुद पूरी करते।

अपनी ज़ुबाने मुबारक महफ़ूज़ रखते और सिर्फ उसी चीज़ के लिए ज़ुबान से कुछ फ़रमाते जिस से आप को कुछ सरोकार होता। लोगों की दिलदारी फरमाते और उन का दिल न दुखाते। किसी क़ौम या बिरादरी का सरदार और शरीफ़ आदमी आता तो उस की इज़्ज़त करते, और उसे अच्छे ओहदे पर मुक़र्रर करते। लोगों के बारे में कुछ

www.abulhasanalinadwi.org

कहते तो बहुत सोच समझ कर कहते और उन्हें आप अपनी सरसता व मीठे वचन से महरूम न रखते। अपने साथियों के हालात की बराबर ख़बर रखते। लोगों से लोगों के मामलों के बारे में पूछते रहते। अच्छी बात की अच्छाई बयान करते और उसे बल प्रदान करते। बुरी बात की बुराई करते और उसे कमज़ोर करते। आपका व्यवहार सम तथा एक सा होता। आप किसी बात से ग़फ़लत न करते इस डर से कि कहीं दूसरे लोग भी ग़ाफ़िल न होने लगें। हर हाल और हर मौक़े के लिए आप के पास उस हाल के मुताबिक़ ज़रूरी सामान था। हक़ के मुआमले में न कोताही करते न हद से आगे बढ़ते। आप के क़रीब जो लोग रहते थे वह सब से अच्छे और चुने हुए होते थे। आप की निगाह में सब से ज़्यादा अफ़ज़ल वह था जिस का उपकार और अख़लाक़ आम और सब के लिए हो। सब से ज़्यादा उस की क़द्र करते जो दूसरों का दुःख बाँटने तथा उन की मदद व सहायता करने में सब से आगे होता। अल्लाह का नाम लेते हुए खड़े होते और अल्लाह का नाम लेते हुए बैठते। जब कहीं जाते तो जहाँ जगह मिलती वहीं बैठते और दूसरों से ऐसा ही करने के लिए कहते। अपनी सभा में आए हुए लोगों में से हर व्यक्ति को पूरा सम्मान देते। आप की सभा में शरीक हर व्यक्ति यह समझता कि उस से बढ़ कर आप की निगाह में कोई और नहीं है। अगर कोई व्यक्ति आप को किसी मक़सद से बिठा लेता या किसी ज़रूरत में आप से बात करता तो बड़े सुकून के साथ उस की पूरी बात सुनते यहाँ तक कि वह खुद ही अपनी बात पूरी कर के चला जाता। अगर कोई व्यक्ति आप से कुछ माँगता और कुछ मदद चाहता तो बिना उसकी ज़रूरत पूरी किए उसे न लौटाते, या कम से कम नरम और मीठे एवं अच्छे प्रकार से जवाब दे देते। आपका सदाचरण तमाम लोगों के लिए आम था। आप उनके हक़ में बाप हो गये थे। हक़ के मुआमले में तमाम लोग आपकी नज़र में बराबर थे। आपकी मज्लिस ज्ञान व भक्ति, हया व शर्म, सब्र व अमानतदारी की मज्लिस थी। न उसमें आवाज़ें बुलन्द होती थीं न

www.abulhasanalinadwi.org

किसी की बुराइयाँ बयान की जाती थीं, न किसी की इज़्ज़त पर हमला होता न किसी की कमज़ोरियों का ढिंडोरा पीटा जाता। सब एक दूसरे के बराबर थे और सिर्फ तक़्वा के लिहाज़ से उनको एक दूसरे पर फ़ज़ीलत हासिल होती थी। इसमें लोग बड़ों का सम्मान और छोटों के साथ रहमदिली व शफ़क़त का मुआमला करते थे। ज़रूरतमन्द को अपने पर प्राथमिकता देते थे। मुसाफ़िर और नये आने वाले की हिफ़ाज़त करते और उसका ख़याल रखते थे।

आप सदा खुश रहते थे। बहुत नर्म पहलू थे। न सख्त तबीअत के थे न सख्त बात कहने के आदी थे, न चिल्ला कर बोलने वाले, न घमण्ड की बात करने वाले, न किसी को ऐब लगाने वाले, न तंगदिल। जो बात आपको पसन्द न होती उसकी ओर ध्यान न देते यानी उसे नज़र अन्दाज़ कर देते और इनकार करने के बजाए ख़ामोश रहते। तीन बातों से आपने अपने को बिल्कुल बचा रखा था:–

1. न किसी की बुराई करते।
2. न किसी पर ऐब लगाते।
3. न किसी की कमज़ोरियों और छिपी हुई बातों के पीछे पड़ते।

सिर्फ वह बात करते थे जिस पर सवाब की उम्मीद होती थी। आप जब बात करते वहां हाज़िर लोग अदब से इस तरह सर झुका लेते थे जैसे लगता था कि उनके सरों पर चिड़ियां बैठी हुई हों। जब आप ख़ामोश होते तब यह लोग बात करते, आपके सामने कभी बहस न करते। आपकी मज्लिस में अगर कोई आदमी बात करता तो बाक़ी लोग ख़ामोशी से सुनते यहाँ तक कि वह अपनी बात पूरी कर लेता। आपके सामने हर व्यक्ति की बात का वही दर्जा होता जो उसके पहले वाले व्यक्ति का होता। जिस बात पर सब लोग हंसते उस पर आप भी हंसते, जिस पर सब तअ़ज्जुब करते आप भी उस पर तअ़ज्जुब करते। मुसाफ़िर और परदेसी की बेतमीज़ी और हर तरह के सुवाल को सब्र व सुकून के साथ सुनते यहाँ तक कि आपके साथी ऐसे लोगों का ध्यान अपनी ओर कर लेते।

www.abulhasanalinadwi.org

आप फ़रमाते थे – तुम किसी ज़रूरतमन्द को पाओ तो उसकी मदद करो। आप तअ़रीफ़ उसी व्यक्ति की कुबूल फ़रमाते जो हद के अन्दर रहता। किसी की बात के दौरान बात न करते और उसकी बात कभी न काटते, हाँ, अगर वह हद से बढ़ने लगता तो उसको रोक देते या मज्लिस से उठकर उसकी बात समाप्त कर देते।

आप सबसे ज़्यादा खुले दिल, सच्ची बात कहने वाले, नर्म तबीअ़त और ज़िन्दगी के मुआ़मलात में बहुत दयालू थे। जो आपको पहली बार देखता उस पर आपका रोअ़ब छा जाता और जब आपके साथ रहता और जान पहचान हासिल होती तो वह आपका दिलदादा और फ़रेफ़्ता हो जाता। आपकी तअ़रीफ करने वाला कहता है कि न आपके पहले मैं ने आप जैसा कोई व्यक्ति देखा न आपके बाद।"

अल्लाह ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मनमोहक हुस्न व जमाल प्रदान किया था और महब्बत व दिलकशी और रोअ़ब व हैबत का हसीन व खूबसूरत पैकर बनाया था, हज़रत हिन्द इब्ने अबी हाला बयान करते हैं कि :–

"आप बहुत खुद्दार और शान व शौकत वाले थे और दूसरो की निगाह में बहुत शान व शौकत और रोअ़ब वाले। आपका मुखड़ा चौदहवीं के चाँद की तरह दमकता था।"

हज़रत बराअः इब्ने आज़िब बयान फरमाते हैं :–

"अल्लाह के रसूल (स०) म्याना क़द थे। मैं ने आपको एक बार लाल लिबादा पहने हुए देखा, उस से अच्छी कोई चीज़ मैं ने कभी नहीं देखी।"

हज़रत अबू हुरैरह (र०) बयान करते हैं :–

"आप दरम्यानी क़द के थे, कुछ लम्बाई लिए हुए। रंग बहुत गोरा, दाढ़ी के बाल काले, दहाना निहायत सुडोल और सुन्दर, आँखों की पलकें लंबी, चौड़े काँधे। मैं ने आप जैसा आपके पहले या आपके बाद नहीं देखा।"

हजरत अनस (र०) कहते हैं कि :–

www.abulhasanalinadwi.org

"मैं ने हरीर व दीबाज (मख़मल) को भी आपके हाथ से ज़्यादा अधिक नर्म नहीं पाया न आपकी खुश्बू से बढ़ कर कोई खुश्बू सूँघी।"

अल्लाह से लगाव

अल्लाह ने आपको अपना प्रिय रसूल बना कर भेजा था और आपके अगले पिछले सब गुनाह मुआ़फ कर दिये थे, फिर भी आप सब से ज़्यादा इबादत करने वाले थे।

हज़रत मुग़ीरा इब्ने शोबा (र0) कहते हैं कि एक बार अल्लाह के रसूल (स0) नमाज़ (नफ़्ल) में इतनी देर तक खड़े रहे कि आपके पैरों में वरम आ गया, लोगों ने कहा कि आपके तो अगले पिछले गुनाह मुआ़फ हो चुके हैं, यह सुनकर आपने फ़रमाया "क्या मैं अल्लाह का शुक्र अदा करने वाला बन्दा न बनूँ ?"

हज़रत आ़इशा (र0) फ़रमाती हैं कि अल्लाह के रसूल (स0) ने कुर्आन की एक आयत में पूरी रात गुज़ार दी।

हज़रत अबू ज़र (र0) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (स0) रात को नमाज़ के लिए खड़े हुए और एक आयत में सुबह कर दी। यह सूरः माइदा की 118वीं आयत थी जिसका मतलब यह है :–

"अगर तू उनको अ़ज़ाब दे तो बेशक वह तेरे बन्दे हैं और अगर मुआ़फ फ़रमा दे तो तू ग़ालिब हिक्मत वाला है।"

हज़रत आइशा बयान करती हैं कि "आप (स0) जब रोज़े रखते थे उसकी अधिकता देख कर हम लोग कहते कि अब शायद आप हमेशा रोज़े से ही रहेंगे, जब रोज़े से न होते तो हम सोचते कि शायद अब आप रोज़ा न रखेंगे।"

हज़रत अनस (र0) बयान करते हैं कि "अगर कोई आपको रात के क़याम (नमाज़) की एक हालत में देखना चाहता तो देख सकता था और उसी तरह नींद की हालत में देखना चाहता तो भी देख सकता था।"

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अश्शेखीर (र0) कहते हैं कि "मैं आप के पास गया, मैं ने देखा कि आप नमाज़ में मसरूफ हैं और आह भरने से आपके सीने से ऐसी आवाज़ निकल रही है जैसे देगची उबल रही हो। आपको नमाज़

www.abulhasanalinadwi.org

के सिवा किसी और चीज़ से तसल्ली न होती थी और मअ़लूम होता था कि नमाज़ के बाद भी आप नमाज़ के इन्तिज़ार में हैं। आप फरमाते थे "मेरी आँख की ठंडक नमाज़ में रखी गई है।"

आपके साथियों का बयान है कि जब कोई परेशानी की बात सामने होती तो आप फौरन नमाज़ की ओर ध्यान देते।

हज़रत अबूदर्दा (र0) बयान करते हैं कि "जब कभी रात को तेज़ हवाएं चलतीं तो आप मस्जिद में पनाह लेते यहाँ तक कि हवा थम जाती। अगर आकाश में कोई परिवर्तन होता जैसे सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण, तो आप नमाज़ पढ़ते और उस से पनाह हासिल करते यहाँ तक कि ग्रहण समाप्त हो जाता।" आप हर समय नमाज़ की प्रतीक्षा में रहते और इसके बिना आपको सुकून न मिलता और जब तक नमाज़ पढ़ न लेते आपकी बेचैनी बनी रहती। कभी आप हज़रत बिलाल से फरमाते "बिलाल नमाज़ का इन्तिजाम करो और हमारे सुकून का सामान करो।"

दुन्या की मुहब्बत से दूर

जहाँ तक धन दौलत का संबन्ध है, रसूलुल्लाह (स0) की निगाह में उसकी कोई हैसियत और अहमियत नहीं थी। आपके शगिर्दों के शगिर्द भी माल व दौलत को मिट्टी के ठीकरों से ज्यादा नहीं समझते थे। उनकी सादा ज़िन्दगी, दुन्या की महब्बत से दूरी, दूसरों पर अपना माल खर्च करने का उनका शौक़, ग़रीबों की मदद, खुद भूके रहकर दूसरों को खाना खिला देना और दोस्त तो दोस्त दुश्मन पर भी महरबानी करना, इस सिल्सिले के जो वाक़िआत तारीख़ में महफ़ूज़ हैं उनसे इन्सानी अक़्ल हैरान रह जाती है। जब आपके खादिमों का यह हाल था तो खुद आप (स0) का इस मुआमले में क्या हाल होगा जो उनके रहनुमा थे।

इसलिए हम उन में से कुछ बातों को बयान करते हैं जो आपके साथियों की ज़बान से हम तक पहुँची हैं।

आप (स0) ने जो दो बातें खास तौर से फरमाई हैं, जिन पर आप खुद अमल करते थे, जिन्हें आप की पूरी ज़िन्दगी की रोशन मिसाली कहा जा सकता है, आप फरमाया करते थे :

www.abulhasanalinadwi.org

1. ऐ अल्लाह! अस्ल जिन्दगी तो आखिरत (मरने के बाद) की जिन्दगी है।

2. मुझे दुन्या से क्या सरोकार! मेरा दुन्या से सम्बन्ध बस इतना ही है जैसे कोई मुसाफिर राह में थोड़ी देर के लिए किसी पेड़ के साये में दम ले ले, फिर अपनी राह ले और उसको छोड़ कर चल दे।

हज़रत उमर (र०) ने आपको एक बार चटाई पर इस हालत में लेटे हुए देखा कि आप के पहलू में उसके निशान पड़ गये थे, यह देख कर उनकी आँखों में आँसू भर आये। आप (स०) ने पूछा क्या बात है? कहा या रसूलल्लाह! आप अल्लाह की मख्लूक़ में सबसे ज्यादा बुज़ुर्ग हैं और ऐश व आराम क़ैसर व किस्रा कर रहे हैं। यह सुनकर आपका चेहरा लाल हो गया और फरमाया : यह वह लोग हैं जिनको दुन्या की जिन्दगी के सारे मज़े यहीं दे दिये गये हैं। आराम की जिन्दगी न सिर्फ आप अपने लिए ना पसन्द फरमाते थे बल्कि अपने खानदान के लिए भी इसे पसन्द न करते थे। आपकी दुआ थी : ऐ अल्लाह! आले मुहम्मद का रिज़्क़ (खाना–पानी) सिर्फ ज़रूरत भर हो। हज़रत अबू हुरैरह (र०) बयान करते हैं कि क़सम है उसकी जिसके क़ब्ज़े में अबू हुरैरह की जान है! अल्लाह के नबी और उनके घर वाले कभी लगातार तीन दिन गेहूँ की रोटी पेट भर कर न खा सके, यहाँ तक कि इस दुन्या से पर्दा फरमा लिया।

हज़रत आयशह (र०) बयान करती हैं : हम मुहम्मद (स०) के घर वालों को एक चाँद गुज़र कर दूसरा चाँद नज़र आ जाता और हमारे घर में चूल्हा न जलता, सिर्फ खजूर और पानी पर हमारी गुज़र बसर होती थी।

आप (स०) की ज़िरह एक यहूदी के पास रहन (गिरवी) रखी थी और आपके पास इतना न था कि आप उसको छुड़ा सकते, यहाँ तक कि इसी हाल में आप की वफात हो गई।

आप (स०) ने आखिरी हज इस हाल में किया कि जहाँ तक नज़र पहुँचती मुसलमान नज़र आ रहे थे, पूरा अरब आपके मातहत था और हालत यह थी कि आप एक खस्ता हाल कजावे पर थे, आप पर सिर्फ एक चादर पड़ी हुई थी जिसकी मालियत चार दिरहम से ज्यादा न थी, उस समय आपने

www.abulhasanalinadwi.org

फरमाया : ऐ अल्लाह! इसको ऐसा हज बना जिसमें कोई दिखावा और शोहरत तलबी न हो।

हजरत अबूज़र (र0) से आप (स0) ने एक मौके पर फरमाया : मुझे यह गवारा नहीं कि मेरे पास उहद पहाड़ के बराबर सोना हो और तीन दिन गुज़र जायें और उसमें से एक दीनार भी मेरे पास बाकी रहे, सिवाए इसके कि किसी दीनी काम के लिए मैं उसमें से कुछ बचा रखूँ वरना अल्लाह के बन्दों में मैं उसको इस तरह और इस तरह दायें बायें और पीछे लुटा दूँ।

हजरत जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह (र0) बयान करते हैं कि कभी ऐसा नहीं हुआ कि अल्लाह के रसूल (स0) से कोई चीज़ माँगी गई हो और आपने उसके जवाब में "नहीं" कहा हो। हज़रत इब्ने अब्बास (र0) कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (स0) फैयाज़ी और दान करने में तेज़ हवा से ज्यादा तेज़ थे।

हज़रत अनस (र0) बयान करते हैं कि एक व्यक्ति ने आप (स0) से कुछ माँगा तो आपने उसे बकरियों–भेड़ों का पूरा रेवड़ जो दो पहाड़ों के बीच में था, दे दिया। वह यह रेवड़ लेकर अपनी क़ौम में वापस गया और कहने लगा : लोगो इस्लाम ले आओ, मुहम्मद (स0) इस तरह बाँट रहे हैं कि जैसे उनको मुखमरी का डर ही न हो। एक बार आप (स0) की सेवा में 90 हज़ार दिरहम पेश किये गये, यह रक़म एक चटाई पर डाल दी गई और आपने खड़े होकर उसको बाँटना शुरू किया और किसी माँगने वाले को वापस न किया, यहाँ तक कि पूरा ढेर खत्म हो गया।

खुदा की मख्लूक़ के साथ आप का मुआमला

इबादत का शौक़ और दुन्या के मायाजाल से दूरी तथा अल्लाह को हर वक़्त याद करने और दुआ व मुनाजात करने और उसकी मख़लूक़ पर शफ़क़त और उनकी दिलदारी और हर आदमी को उसका जाएज़ हक़ देने तथा उसके मर्तबा व हैसियत के मुताबिक़ मुआमला करने में कोई फ़र्क़ न आता था और यह दोनों बातें ऐसी हैं कि इनको इस तरह जमा करना दूसरे के लिए मुम्किन नहीं है। आप फरमाते थे :

"जो मैं जानता हूँ वह अगर तुम जान लेते तो बहुत कम हँसते और

www.abulhasanalinadwi.org

बहुत ज्यादा रोते।"

आप (स0) तमाम लोगों में सबसे ज्यादा फ़सख दिल, नर्म तबीअ़त और खानदानी लिहाज़ से सबसे ज्यादा मोहतरम थे। आप (स0) अपने साथियों से अलग–थलग न रहते बल्कि उनसे पूरा मेल जोल रखते थे, उनसे बातें करते, उनके बच्चों के साथ खुश दिली से मिलते–जुलते, उन बच्चों को गोद में बिठाते, गुलाम और आज़ाद, गरीब और कंगाल सबकी दअ़वत क़ुबूल फरमाते, बीमारों की मिज़ाज पुर्सी करते चाहे वह शहर के आखिरी किनारे पर हो, उज़्र बयान करने वाले की मअ़ज़िरत कुबूल करते, आपको अपने साथियों की मजलिस में कभी पैर फैलाए हुए नहीं देखा गया।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्नुल–हारिस (र0) बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल (स0) से ज्यादा हँसमुख किसी को नहीं देखा।

हजरत जाबिर इब्ने समुरह (र0) कहते हैं कि मुझे अल्लाह के रसूल (स0) की मजलिस में सौ बार से ज्यादा बैठने का मौक़ा मिला, मैंने देखा कि आपके साथी एक दूसरे से अशआ़र सुन–सुना रहे हैं और पिछले ज़माने की कुछ बातों और और वाक़िआत का ज़िक्र भी कर रहे हैं, और आप (स0) चुप हैं। और कभी कोई हँसी की बात होती तो आप (स0) भी उनके साथ मुस्कुराते।

हज़रत शरीद (र0) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (स0) ने मुझ से उमैया इब्नुस–सल्त के अशआ़र सुनाने की फरमाइश की, मैंने आपको उसके अशआ़र सुनाए।

आप (स0) निहायत नर्मदिल, महब्बत करने वाले और महरबानी करने वाले थे। इन्सानी जज़्बात और लतीफ एहसासात आपकी सीरत का खास हिस्सा थे। हज़रत अनस इब्ने मालिक (र0) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (स0) अपनी बेटी हज़रत फातिमा से फरमाते : मेरे दोनों बेटों (हसन व हुसैन) को बुलाओ। वह दौड़े हुए आते तो आप उन दोनों से मुँह मिलाते और उनको अपने सीने से लगा लेते। आप (स0) ने एक बार हज़रत हसन (र0) को बुलाया, वह दौड़ते हुए आये और आप (स0) की गोद में गिर पड़े फिर वह आपकी दाढ़ी में अपनी उंगलियाँ डालने लगे, इसके बाद आप (स0)

www.abulhasanalinadwi.org

ने अपना मुँह खोल दिया तो वह अपना मुँह आपके मुँह में डालने लगे।

हज़रत आयशा (र0) बयान करती हैं कि हज़रत ज़ैद इब्ने हारिसा (र0) (जो आपके गुलाम थे) मदीने आये, उस वक़्त आप (स0) घर पर थे। वह घर पर आये और कुंडी खटखटाई आप उसी वक़्त उठ खड़े हुए और आप (स0) उस वक़्त पूरे कपड़े भी न पहने थे, चादर शरीर से गिरी जा रही थी, ज़ैद को देखते ही अपने गले से लगा लिया।

हज़रत उसामा इब्ने ज़ैद (र0) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (स0) की एक बेटी ने आपको यह पैग़ाम कहलवाया कि मेरे बच्चे की आखिरी साँसें चल रही हैं, आप जल्दी आयें। आपने उनको सलाम कहलवाया और फ़रमाया कि अल्लाह ही के लिए है जो उसने लिया और उसी के लिए है जो उसने दिया। हर चीज़ उसके यहाँ नामज़द और मुक़र्रर है। बस चाहिए कि सब्र से काम लें, और अज्र व सवाब की नियत और उम्मीद रखें। उन्होंने आपको क़सम दिलाई कि आप ज़रूर आयें। आप खड़े हुए और तशरीफ ले गये, हम सब आपके साथ थे। आप वहाँ पहुँचे तो बच्चा गोद में आपके पास लाया गया, आपने उसे अपनी गोद में ले लिया। उस वक़्त उसकी साँस उखड़ चुकी थी। आपकी आँखों से आँसू जारी हो गये। हज़रत सअ़द (र0) ने कहा : या रसूलल्लाह यह क्या है? आप (स0) ने फरमाया : यह रहम है, जो अल्लाह अपने बन्दों में से जिसके दिल में चाहता है डाल देता है, और बेशक अल्लाह अपने रहम दिल बन्दों ही पर रहम फ़रमाता है।

जब बद्र की जंग के क़ैदियों के साथ हज़रत अब्बास को बाँधा गया उनकी कराह सुन कर आपको नींद नहीं आयी। जब अन्सार को यह बात मालूम हुई तो उन्होंने उनका बन्धन खोल दिया, मगर अन्सार की यह बात आपको इस पर तैयार न कर सकी कि हज़रत अब्बास और दूसरे क़ैदियों में फ़र्क़ किया जाए और उन का फ़िदया (एक प्रकार का टैक्स) छोड़ दिया जाए।

एक अअ़राबी (देहाती) अल्लाह के रसूल (स0) के पास आया और कहने लगा : क्या आप लोग अपने बच्चों को प्यार करते हैं, हम तो उनको प्यार नहीं करते। आप (स0) ने फरमाया : अगर अललाह ने तुम्हारे दिल से रहम निकाल लिया हो तो मैं तुमहारे लिए क्या कर सकता हूँ।

www.abulhasanalinadwi.org

आप (स0) बच्चों पर बहुत महरबान थे, और उनसे बड़ी नर्मी व महब्बत का बरताव करते थे। हज़रत अनस (र0) बयान करते हैं कि आपका गुज़र कुछ बच्चों के पास से हुआ जो खेल रहे थे, आपने उनको सलाम किया। वह कहते हैं : आप हम में घुले मिले रहते थे, मेरे एक छोटे भाई से आप (स0) फरमाते : अबू उमैर! तुम्हारी छोटी चिड़िया क्या हुई?

मुसलमानों पर आप (स0) बहुत ज्यादा महरबान थे, और उनके हाल की बहुत रिआयत फरमाते थे। इन्सानों में जो उक्ताहट और हिम्मत की कमज़ोरी पैदा होती रहती है उसका बराबर लिहाज़ रखते थे।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद (र0) बयान करते हैं : अल्लाह के रसूल (स0) हमको जो नसीहत फ़रमाते थे वह वक़्फ़े के साथ होती थी, इस ख़याल से कि कहीं हमारे अन्दर उक्ताहट न पैदा होने लगे। नमाज़ से इतना ज्यादा लगाव के बावजूद आप (स0) अगर किसी बच्चे का रोना सुन लेते तो नमाज़ मुख़्तसर कर देते। आप (स0) ने खुद इरशाद फरमाया : मैं नमाज़ के लिए खड़ा होता हूँ कि लम्बी नमाज़ पढ़ूँ मगर किसी बच्चे के रोने की आवाज़ सुनता हूँ तो इस ख़याल से नमाज़ मुख़्तसर कर देता हूँ कि उसकी माँ को दुश्वारी और तकलीफ़ न हो। वह कहते हैं कि एक आदमी ने कहा : या रसूलल्लाह खुदा की क़सम मैं सुबह की नमाज़ में महज़ इस लिए नहीं पहुँचता कि फुलाँ साहब बहुत लम्बी नमाज़ पढ़ाते हैं। इसके बाद जो नसीहत आपने फरमाई उससे ज्यादा गुस्से की हालत में मैंने किसी और नसीहत के वक़्त आपको नहीं देखा। आप (स0) ने फरमाया : तुम में वह लोग हैं जो लोगों में बेज़ारी पैदा करते हैं। तुम में से जो नमाज़ पढ़ाए उसको चाहिए कि मुख़्तसर पढ़ाए, इस लिए कि नमाज़ियों में कमज़ोर भी होते हैं, बुड्ढे भी और ज़रूरतमन्द भी।

हज़रत अंजशा (र0) जो औरतों के क़ाफिले के हुदीख्वाँ थे, की आवाज़ बड़ी सुरीली थी। उनकी आवाज़ से ऊँट बहुत तेज़ी के साथ चलते थे, औरतों को इस से परेशानी होती थी, यह देख कर आप (स0) ने कहा :

'अंजशा ज़रा आहिस्ता! इस तेज़ रफ्तारी से कहीं आबगीनों (कमज़ोर व नाज़ुक हस्तियों) को तकलीफ न पहुँच जाए।"

www.abulhasanalinadwi.org

अल्लाह ने आप (स0) के सीने को कीना कपट और किसी का बुरा चाहने से हर तरह पाक कर दिया था, आप (स0) फरमाते थे : तुम में से कोई आदमी मुझ से किसी दूसरे की शिकायत न करे, इस लिए कि मैं यह चाहता हूँ कि तुम्हारे सामने इस हालत में आऊँ कि मेरा दिल बिल्कुल साफ हो।

आप (स0) मुसलमानों के हक़ में शफीक़ (महब्बत करने वाले) बाप की तरह थे, और सारे मुसलमान आपके सामने इस तरह थे जैसे वह आपके कुंबे के लोग हों। आप (स0) को उनसे ऐसा लगाव था जैसे माँ को अपने गोद के बच्चे से होता है। मुसलमानों के माल व दौलत से तो आप (स0) को कोई सरोकार न था, मगर उनके कर्ज़ों को हल्का करना आप ने अपने ज़िम्मे ले लिया था। आप (स0) फरमाते : जिसने तरके में माल छोड़ा, वह उसके वारिसों का है, और कुछ कर्ज़ वग़ैरह बाक़ी है तो वह हमारे ज़िम्मे। एक बार आप (स0) ने फरमाया : कोई मोमिन ऐसा नहीं जिसका मुझ से ज्यादा दुन्या व आखिरत में कोई वली (दोस्त) हो, अगर चाहो तो यह आयत पढ़ो :

तर्जुमा : नबी (स0) मुसलमानों के लिए उनकी जानों से ज्यादा दोस्त और शफीक़ हैं। (सूरह अहज़ाब-6)

इस लिए जिस मुसलमान की मौत हो जाए और वह कुछ माल छोड़े तो वह उसके असबा (करीबी रिश्तेदारों) का हक़ है, वह जो भी हों, अगर उसके ज़िम्मे कुछ क़र्ज या ऐसी जमीन जायदाद रह जाये जिस के बरबाद हो जाने का खतरा हो, तो मेरे पास आए, उसका ज़िम्मेदार मैं हूँ।

एअ़तिदाल और सलामते ज़ौक़

अल्लाह तआ़ला ने रसूलुल्लाह (स0) को बुलंद अख्लाक़ और ऐसी अअ़ला तबीअ़त अ़ता फरमायी थी जो आने वाली सदियों और मौजूदा व अइंदा नसलों के लिए एक अअ़ला नमूना है।

हज़रत आयशा (र0) बयान करती हैं : अल्लाह के रसूल (स0) को जब दो कामों में किसी एक को तरजीह देनी होती तो हमेशा उसको इख्तियार फरमाते जो ज्यादा आसान होता, बशर्तेकि उस में गुनाह न हो, अगर ऐसा करने में गुनाह होता तो आप उस से सब से ज्यादा दूर होते।

हजरत अबू हुरैरा बयान करते हैं कि आप (स0) ने फरमाया : दीन

www.abulhasanalinadwi.org

आसान है, और जो भी दीन से ज़ोर आज़माई करेगा, दीन उस पर ग़ालिब आ जाएगा, इस लिए दरम्यानी रास्ता और एअ़तिदाल अपनाओ, क़रीब के पहलुओं की रिआ़यत करो, खुश रहो और सुबह–शाम और किसी क़दर रात की इबादत से तक़्वियत हासिल करो।

आप (स0) ने यह भी फरमाया :

"ठहरो ! उतना ही करो जितना करने की तुम्हारे अन्दर ताक़त हो, इस लिए कि खुदा की क़सम अल्लाह तो नहीं थकेगा, तुम ही थक जाओगे।"

हजरत इब्ने अब्बास (र0) बयान करते हैं : अल्लाह के रसूल (स0) से पूछा गया कि अल्लाह को कौन सा दीन सबसे ज्यादा पसन्द है? आप (स0) ने फरमाया : "सुहूलत व खुलूस वाला दीने–इब्राहीमी।"

हजरत इब्ने मस्ऊद (र0) बयान करते हैं : अल्लाह के रसूल (स0) ने फरमाया :

"मुबालग़ा और सख्ती से काम लेने वाले और बाल की खाल निकालने वाले बरबाद हुए।"

आप (स0) अपने साथियों को किसी जगह तअ़लीम व नसीहत के लिए भेजते तो फरमाते :

"आसानी पैदा करना, तंग न करना, खुशखबरी देना, परेशान न करना।"

हजरत अब्दुल्लाह इब्ने अम्र इब्नुल–आ़स (र0) बयान करते हैं : अल्लाह के रसूल (स0) ने फरमाया :

"अल्लाह इस बात को पसन्द करता है कि अपनी नेअ़मत का निशान अपने बन्दों पर देखे।"

बाल–बच्चों के साथ सुलूक

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने घर में आ़म इन्सानों की तरह रहते थे।

हज़रत आयशा (र0) बयान करती हैं : आप (स0) अपने कपड़ों को भी साफ फ़रमाते थे। बकरी का दूध भी खुद दुह लेते थे, और अपना काम

www.abulhasanalinadwi.org

खुद करते थें, अपने कपड़ों में पेवन्द लगा लते थे, जूता गाँठ लेते थे, और इस तरह के और काम करते थे। हज़रत आयशा (र0) से पुछा गया आप (स0) अपने घर में कैसे रहते थे? उन्होंने उत्तर दिया : आप (स0) घर के काम–काज में रहते थे, जब नमाज़ का वक़्त आता तो नमाज़ के लिए बाहर चले जाते।

एक हदीस में आया है : आप (स0) अपनी जूती टाँक लेते थे, कपड़ा सी लेते थे, जैसे तुम में से कोई अपने घर में करता है।

हज़रत आयशा (र0) बयान करती हैं : आप (स0) तमाम लोगों में सब से ज्यादा नर्म और सबसे ज्यादा करीम थे, और हंसते–मुस्कुराते रहते थे।

हज़रत अनस (र0) बयान करते हैं : मैं ने किसी आदमी को नहीं देखा जो अल्लाह के रसूल (स0) से ज्यादा अपने बाल–बच्चों पर शफक़त करने वाला और रहम करने वाला हो। हज़रत आयशा (र0) बयान करती हैं : अल्लाह के रसूल (स0) ने फरमाया कि तुम में से सब से बेहतर वह है जो अपने बाल– बच्चों के लिए सब से बेहतर हो, और मैं अपने बाल–बच्चों के मामले में तुम सब से ज्यादा बेहतर हूँ।

हज़रत अबू हुरैरा (र0) कहते हैं : अल्लाह के रसूल (स0) ने किसी खाने में कभी ऐब नहीं निकाला, अगर ख्वाहिश हुई तो खाते थे, और ना पसन्द हुआ तो छोड़ दिया।

दुन्या से फायदा उठाने में पीछे, खतरों और कुरबानी में आगे।

अपने घर वालों और सगे रिश्तेदारों के साथ आप (स0) हमेशा ऐसा बरताव करते कि जो आप से जितना करीब होता, आप खतरों और आज़माइशों में उसे उतना ही आगे रखते और इन्आम व माले ग़नीमत की तक़सीम के वक़्त उतना ही पीछे रखते। जब काफिरों की फौज के सरदार उतबा, शैबा और वलीद ने एक मौक़े पर मदीने के लोगों को जो मुहाजिर थे लल्कारा तो आप ने हजरत हमज़ा, हजरत अ़ली और हजरत उबैदा (र0) को आवाज़ दी, और उनके मुक़ाबले पर भेजा, जबकि मुहाजिरों में कई ऐसे बहादुर शहसवार मौजूद थे जो उन से दो–दो हाथ कर सकते थे। आप (स0) के खान्दान बनी

www.abulhasanalinadwi.org

हाशिम के यह तीनों लोग खून और रिश्ते में आप से सब से क़रीब थे और आप को सब से महबूब थे लेकिन आप ने उन को इस खतरे से बचाने के लिए दूसरे लोगों को खतरे में नहीं डाला और उन्हीं को मुक़ाबले के लिए भेजा। अल्लाह ने उन को अपने दुश्मनों पर कामियाबी दी। हज़रत हमजा व अ़ली (र०) कामियाब हो कर वापस आए, हजरत उबैदा (र०) को ज़ख्मी हालत में लाया गया।

आप (स०) ने जब सूद ब्याज को हराम और जाहिलियत के खून को खत्म करने का एलान किया तो इब्तिदा अपने चचा हजरत अब्बास इब्ने अब्दुल मुत्तलिब और अपने भतीजे रबीआ़ इब्नुल हारिस इब्ने अब्दुल मुत्तलिब से की। आखिरी हज के मौके पर आप (स०) ने फरमाया,

"जाहिलियत के ज़माने का सूद आज से खत्म है और पहला सूद जो मैं खत्म करता हूँ, वह हमारे यहाँ अब्बास इब्ने अब्दुल मुत्तलिब का सूद है। जाहिलियत के ज़माने का खून भी खत्म है और वह हमारे ही यहाँ का रबीआ़ इब्नुल हारिस के फरज़न्द का खून है।"

राहत व आराम, इन्आ़म व इकराम के वक़्त आप आ़म बादशाहों या हुकमरानों या सियासी लोगों के रवैये व आदत के खिलाफ इन लोगों (खान्दान) को हमेशा पीछे रखते थे और दूसरों को आगे रखते थे। हज़रत अ़ली (र०) बयान करते हैं :

"हजरत फातिमा (आप (स०) की बेटी) को चक्की पीसने में कठिनाई होती थी। उन्हीं दिनों उनको पता चला कि अल्लाह के रसूल (स०) के पास कुछ बाँदियाँ आई हैं। हजरत फातिमा (र०) आप (स०) की खिदमत में हाज़िर हुईं कि उन्हें भी उन में से खिदमत व मदद के लिए कोई बाँदी मिल जाए, मगर आप (स०) उस वक़्त मौजूद नहीं थे, तो हजरत फातिमा (र०) ने हजरत आ़इशा (र०) से इस का ज़िक्र किया, उन्हों ने आप (स०) से कहा, तो अल्लाह के रसूल (स०) हमारे घर आए, उस वक्त हम सोने के लिए लेट चुके थे, आप (स०) को देख कर हम खड़े होने लगे, आप (स०) ने फरमाया : रूके रहो, यहाँ तक कि आप (स०) मेर पास आ गये और फरमाया : क्या मैं तुम को

www.abulhasanalinadwi.org

इस से बेहतर बात न बताऊँ जिसका तुम ने सुवाल किया है? जब तुम सोने के लिए लेटो तो 34 बार अल्लाहु– अक्बर कहो, 33 बार अल्हम्दु लिल्लाह और 33 बार सुब्हानल्लाह कहो, यह तुम्हारे लिए उस से बेहतर है जिस का सुवाल तुम लोगों ने मुझ से किया था।"

एक दूसरी जगह आता है कि आप (स0) ने फरमाया : खुदा की क़सम इस हालत में कि सुफ्फा वालों के पेट भूख से पीठ से लग गये हैं, मैं तुम्हें कुछ नहीं दे सकता, मेरे पास उन पर खर्च करने के लिए कुछ नहीं है, इन (गुलाम व बाँदयों) को बेच कर मैं इस आमदनी को उन पर खर्च करूँगा।

शुऊ़र की लताफत और जज़्बात की पाकीज़गी

आप (स0) की सीरत में नुबुव्वत और सच्चाई की दावत के बड़े काम इन्सानियत के दर्द और उस की फिक्र में दिन रात मश्गूल रहना, जिनका बरदाश्त करना पहाड़ों के लिए भी आसान न था, लतीफ इन्सानी जज़्बात और पाकीज़ा एहसासात पूरी चमक–दमक के साथ किरनें बिखेरते थे। इस गैर मअ़मूली कुव्वते इरादी, अटल राय व मसलक के साथ जो नबियों की पहचान व खुसूसियत होती है और अल्लाह की तरफ बुलाने और अल्लाह का कलमा बुलन्द करने और उसके अहकाम पर अमल करने के सिलसिले में उनके रास्ते में कोई चीज़ रूकावट नहीं बन सकती। आप (स0) ने उन वफादार साथियों को अपनी जिन्दगी के आखिरी दिन तक नहीं भुलाया, जिन्होंने आपकी दावत पर लब्बैक कहा था, और राहे हक़ में सब कुछ लुटा दिया था, और जो उहद की जंग में शहीद हुए थे उनको बराबर याद करते रहे, उनके लिए दुआएं करते रहे और उनके घर तशरीफ ले जाते रहे।

यह महब्बत व वफा इन्सानी जिस्मों से बढ़ कर उन बेजान पत्थरों, पहाड़ों और वादियों तक में सरायत कर गई थी, जहाँ इश्क़ व वफा और कुरबानी व जाँनिसारी के ये मन्ज़र दुन्या ने देखे थे। हजरत अनस इब्ने मालिक (र0) बयान फरमाते हैं कि आप (स0) ने उहद पहाड़ को देख कर फरमाया : यह वह पहाड़ है जो हम से महब्बत करता है और हम उस से महब्बत करते हैं। हजरत अबू हुमैद (र0) कहते हैं कि हम रसूलुल्लाह (स0)

www.abulhasanalinadwi.org

के साथ तबूक से वापस आये, जब मदीना करीब आया तो आप (स0) ने फरमाया : यह ताबा (मदीना तैयिबा) है और यह वह पहाड़ है जो हम से महब्बत करता है और हम उस से महब्बत करते हैं।

हजरत उक़बा (र0) का बयान है कि रसूलुल्लाह (स0) एक दिन उहद के शहीदों के पास गये और उनके लिए दुआए मग्फिरत की। हजरत जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह (र0) कहते हैं : मैं ने देखा कि जब रसूलुल्लाह (स0) के सामने उहद के शहीदों को याद किया गया तो आप (स0) ने फरमाया : खुदा की कसम मेरी चाहत थी कि मैं भी उहद के शहीदों के साथ पहाड़ के दामन में रह जाता। आप (स0) ने अपने चहीते चचा और रज़ाई भाई (जिन्होंने आप (स0) की महब्बत और इसलाम की हिमायत में जान दी और उनके साथ वह सुलूक किया गया जो किसी के साथ न हुआ था) की शहादत का सदमा बड़े सब्र के साथ बरदाश्त किया, लेकिन जब आप (स0) उहद से वापस होते हुए मदीना तशरीफ लाए और बनी अब्दुल अश्हल के घर के सामने से आप (स0) गुजरे, और उनके शहीदों पर रोने की आवाज़ आप (स0) के कानों में पड़ी तो आपके इन्सानी जज़बात उमंड पड़ें और आपकी आँखें तर हो गयीं, आप (स0) ने फरमाया : लेकिन हमज़ा के लिए रोने वालियाँ नहीं हैं।

इसके बावजूद यह शरीफाना इन्सानी जज़बात, नुबुव्वत और दावते इसलाम की बड़ी ज़िम्मेदारी और अल्लाह की हुदूद की हिफाज़त पर कोई असर न डाल सके। सीरत निगार और इतिहासकार बयान करते हैं कि जब सअ़द इब्ने मुआज़ और उसैद इब्ने हुज़ैर (र0) बनी अब्दुल अश्हल के घर वापस आए तो उन्होंने अपने घर की औरतों को हुकम दिया कि तैयार होकर जायें और रसूलुल्लाह (स0) के चचा सैयिदना हमज़ा (र0) का मातम करें, उन औरतों ने ऐसा ही किया, जब रसूलुल्लाह (स0) तशरीफ लाए तो उनको मस्जिद नबवी के दरवाज़े पर रोता हुआ पाया, आप (स0) ने फरमाया : अल्लाह तुम पर रहम करे, वापस जाओ, तुम्हारे यहां आने ही से ग़म ख्वारी का सामान हो गया।

एक रिवायत में यह भी आता है कि आप (स0) ने पूछा कि यह सब क्या है? आप (स0) को बताया गया कि अन्सार (र0) ने अपनी औरतों को

www.abulhasanalinadwi.org

किस मक़्सद से यहाँ भेजा है, आप (स0) ने अल्लाह से मग़्फिरत माँगी, अच्छे अल्फाज़ में उनको खिताब किया और फरमाया : मेरा मतलब यह नहीं था, मैं मैयत पर रोना पसन्द नहीं करता, फिर आप (स0) ने उस से मना फरमाया।

इस से नाज़ुक मौक़ा सैयिदना हमज़ा (र0) के क़ातिल वहशी (र0) के साथ पेश आया, जब मुसलमानों ने मक्के को फतह कर लिया तो दुन्या उनकी नज़र में तारीक हो गयी और रास्ते बन्द हो गये, उनके लिए कुदरती तौर पर मुश्किलात पैदा हो गयीं, उन्हों ने शाम व यमन और दूसरी जगहों पर जाने का इरादा किया, उन से लोगों ने कहा : भले आदमी! रसूलुल्लाह (स0) किसी ऐसे आदमी को क़तल नहीं करते जो आपके दीन में दाखिल हो जाए, उनकी समझ में यह बात आ गई, और वह कलमा ए शहादत पढ़ कर मुसलमान हो गए, मुसलमान होने के बाद जब वह पहली बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर हुए तो आपने उनका इसलाम कुबूल फरमाया, कोई ऐसी बात नहीं फरमाई जिस से उनके दिल में ख़ौफ़ पैदा हो, हज़रत हमज़ा (र0) के क़तल का वाक़िआ आप (स0) ने उनसे सुना, जब वह सब कह चुके तो आप (स0) के अन्दर वह लतीफ इन्सानी एहसास और कैफियत ज़रूर पैदा हुई, लेकिन यह खास कैफियत और जज़्बा आप (स0) के मन्सबे नुबुव्वत के मिज़ाज और एहसासे ज़िम्मेदारी पर ग़ालिब नहीं आने पाया कि आप उनके इसलाम को कुबूल न फरमाते या गुस्से में उनको क़तल करा देते, आप (स0) ने इसके अलावा कुछ न फरमाया : बन्द–ए–खुदा! मेरे सामने न आया करो, मैं यह चाहता हूँ कि मेरी नज़र तुम पर न पड़े। वहशी (र0) कहते हैं कि उस के बाद मैं बराबर आप (स0) के सामने आने से कतराता रहा कि कहीं आप (स0) मुझे देख न लें, यहाँ तक कि उनकी वफ़ात हो गयी।

बुख़ारी में है कि आप (स0) की नज़र जब मुझ पर पड़ी तो आप (स0) ने फरामया क्या तुम वहशी हो? मैं ने कहा, हाँ, फरमाया क्या तुम्हीं ने हमज़ा (र0) को शहीद किया था? मैं ने कहा, आपको जो मअ़लूम हुआ है वह सहीह है। आप (स0) ने फरमाया क्या तुम यह कर सकते हो कि मेरे सामने न आया करो?

इन फितरी व इन्सानी एहसासात व कैफियात और आला व लतीफ

www.abulhasanalinadwi.org

जज़्बात की झलक हमें वहाँ भी नज़र आती है जब आप (स0) एक मिटी हुई पुरानी क़ब्र पर तशरीफ ले गए, उस वक्त आप पर रिक़्क़त तारी हुई और आप रो दिए, फिर आप (स0) ने फरमाया : यह आमिना (हुज़ूर (स0) की माँ) की क़ब्र है। यह उस वक़्त की बात है जब उनकी वफ़ात पर लम्बा ज़माना गुज़र चुका था।

इनायत व महेरबानी और कुव्वते बर्दाश्त

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बुलन्द अख्लाक़, इनायत व नवाज़िश में सारी इन्सानियत के इमाम व पेश्वा थे, अल्लाह तआला का इरशाद है : बेशक आप बहुत अज़ीम अख्लाक़ वाले हैं। रसूलुल्लाह (स0) ने खुद फरमाया कि : अल्लाह ने मेरी तर्बियत फरमाई है, और बेहतरीन तर्बियत फरमाई है।

हजरत जाबिर (र0) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (स0) ने इरशाद फरमाया : अल्लाह ने मुझे अच्छे अख्लाक़ और अच्छे कामों की तकमील के लिए नबी बना कर भेजा है।

हजरत आइशा (र0) से आप (स0) के अख्लाक़ के बारे में पूछा गया तो उन्होंने फरमाया : आप (स0) अख्लाक़ में कुरआन का मुजस्सम नमूना थे।

रह्म व करम, कुशादा दिली और कुव्वते बरदाश्त में आप (स0) का जो मक़ाम था वहाँ तक किसी ज़ेहन व खयाल और तसव्वुर की भी पहुँच नहीं हो सकती, अगर इन वाकिआत को इस मख्सूस तरीके से बयान न किया गया होता जो शक व शुभे से दूर है तो लोगों के ज़ेहन आज उसको कुबूल न करते, लेकिन यह रिवायतें इस क़द्र सहीह, सच्ची और मुसलसल असनाद और एक सच्चे पक्के रावी से दूसरे सच्चे पक्के रावी तक इस तरह मुसलसल और लगातार बयान की गई हैं कि उसकी वजह से वह तारीखी दस्तावेजों से ज्यादा सच्ची पक्की बन गई हैं। इस जगह पर हम इस सिलसिले के चन्द किस्से बयान करते हैं।

आप (स0) की नवाज़िश व करम और बड़े से बड़े दुश्मन के साथ दिलदारी और एहसान का एक नमूना वह था, जब मुनाफिक़ों के सरदार अब्दुल्लाह इब्ने उबै इब्ने सलूल को क़ब्र में उतारा गया, आप (स0) वहाँ

www.abulhasanalinadwi.org

तशरीफ लाये, हुक्म दिया कि उसको क़ब्र से निकाला जाये, उसके बाद आप (स0) ने उसको अपने घुटनों पर रखा और अपना लुआबे दहन उस पर डाला और आपना कुर्ता उसको पहनाया।

हजरत अनस इब्ने मालिक (र0) रिवायत करते हैं कि मैं अल्लाह के रसूल (स0) के साथ चल रहा था, आप (स0) उस वक्त नजरान की चादर पहने हुए थे, जिसके किनारे मोटे थे, रास्ते में एक आराबी आपको मिला, और आप (स0) की चादर पकड़ कर इस ज़ोर से खींची कि आपकी गर्दन पर उसकी वजह से निशान पड़ गए, फिर उस आराबी ने कहा, ऐ मुहम्मद! अल्लाह का जो माल आपके पास है, वह मुझे देने का हुक्म दीजिए। आप (स0) ने उसकी तरफ मुड़ कर देखा और हंसे, फिर हुक्म दिया कि इसको कुछ दिया जाए।

ज़ैद इब्ने सअ़ना (र0) (इसलाम कुबूल करने से पूर्व) आप (स0) के पास आया और क़र्ज़ का मुतालबा किया जो आप (स0) ने उस से लिया था, फिर उसके बाद उसने कपड़ा पकड़ कर आप (स0) के शाने मुबारक से ज़ोर से खींचा और अपनी मुट्ठी में कपड़े को ले लिया और सख़्त अल्फाज़ में बात की, फिर कहा कि तुम अब्दुल मुत्तलिब की औलाद बड़े टाल मटोल करने वाले हो, हजरत उमर (र0) ने उसको झड़का और सख्त लहजे में बात की, लेकिन रसूलुल्लाह (स0) का रवैया मुस्कुराहट का रहा, आप (स0) ने हजरत उमर (र0) से फरमाया, उमर! हम और यह शख्स तुम्हारी तरफ से दूसरे रवैये के मस्तहिक़ थे, मुझे तुम क़र्ज़ जल्द अदा करने का मशवरा देते और इसको नर्म तरीक़े से तक़ाज़ा करने को कहते। फिर आप (स0) ने फरमाया कि इसकी अदाएगी की मुद्दत में अभी तीन दिन बाक़ी हैं। बहरहाल आप (स0) ने हजरत उमर (र0) को उसके क़र्ज़ की अदाएगी का हुक्म दिया और बीस सॉअ़ (लगभग 70 सेर) और ज्यादा देने को फरमाया कि यह उसका मुआवज़ा है जो हजरत उमर (र0) ने उसको डरा दिया था, और फिर यही बात उसके इसलाम लाने का सबब बन गई।

हजरत अनस (र0) बयान फरमाते हैं कि एक बार मक्के में 80 हथियार बन्द आदमी तनईम पहाड़ के पीछे से अचानक आए और धोके से

www.abulhasanalinadwi.org

आप (स0) को नुक़सान पहुंचाना चाहा, आप (स0) ने उन सब को कैद कर लिया और उनको ज़िन्दा रहने दिया।

हजरत जाबिर (र0) रिवायत करते हैं कि हम ने रसूलुल्लाह (स0) के साथ नजद की तरफ फौज कशी की, रास्ते में दोपहर का वक्त हुआ और आराम की ज़रूरत पड़ी, इस इलाक़े में झाड़ियाँ ही झाड़ियाँ थीं, आप (स0) बबूल के एक पेड़ के साये में आराम फरमाने लगे और अपनी तलवार पेड़ पर लटका दी, और लोग भी इधर उधर अलग अलग पेड़ों के नीचे लेट गये। इतने में रसूलुल्लाह (स0) ने हमें आवाज़ दी, हम हाज़िर हुए तो देखा एक आराबी आप (स0) के सामने बैठा हुआ है, आप (स0) ने फरमाया कि मैं सो रहा था कि यह आदमी आया और मेरी तलवार खींच ली, मैं बेदार हुआ तो तलवार खींचे मेरे सर पर खड़ा था, उसने कहा तुम्हें मुझ से कौन बचा सकता है? मैं ने कहा, अल्लाह! उस ने तलवार न्याम में कर ली, उसके बाद बैठ गया और यह है वह आदमी जो तुम्हारे सामने बैठा हुआ है। वह बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (स0) ने उसको कोई सज़ा न दी।

रसूलुल्लाह (स0) के हिल्म व बुर्दबारी का यह हाल था कि एक बार एक आराबी ने मस्जिद में पेशाब कर दिया, लोग यह देख कर उस पर दौड़ पड़े, रसूलुल्लाह (स0) ने फरमाया उसको छोड़ दो और जहाँ उसने पेशाब कर दिया है उस पर एक या कुछ डोल पानी बहा दो, और खयाल रखो कि तुम आसानी पैदा करने वाले बना कर भेजे गये हो, तंगी और दुश्वारी पैदा करने वाले बना कर नहीं।

हजरत मुआविया इब्नुल हकम बयान करते हैं कि मैं रसूलुल्लाह (स0) के साथ नमाज़ पढ़ता था कि एक शख्स को छींक आयी, मैं ने कहा यरहमुकल्लाह। लोग यह सुन कर मुझे घूरने लगे, मैं ने कहा तुम्हारी माँ तुम पर रोए, क्या बात है कि तुम लोग मुझे इस तरह तेज़ निगाहों से घूर रहे हो। यह सुन कर लोग अपनी रानों पर हाथ मारने लगे। जब मुझे लगा कि वह मुझ को खामोश करना चाहते हैं तो मैं चुप हो गया। जब रसूलुल्लाह (स0) ने नमाज़ खत्म फरमाई तो मेरे माँ बाप आप पर कुरबान मैं ने न आप (स0) से पहले आप की तरह कोई मुरब्बी व उस्ताद देखा न आप (स0) के बाद, खुदा

www.abulhasanalinadwi.org

की कसम न आप ने मुझे डाँटा फटकारा न मारा और न बुरा भला कहा, बस यह फरमाया कि नमाज़ में आम इन्सानी बात चीत मुनासिब नहीं होती, नमाज़ सिर्फ तसबीह, तकबीर और तिलावते कुरआन शरीफ के लिए है।

हजरत अनस इब्ने मालिक (र0) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (स0) बहुत रहम दिल थे, आपके पास कोई जरूरतमन्द आता तो आप (स0) उस से वादा ज़रूर करते और अगर कुछ होता तो उसी वक्त उसकी जरूरत पूरी फरमाते, एक बार नमाज़ के लिए जमाअ़त खड़ी हो चुकी थी कि एक आराबी आगे बढ़ा और आप का कपड़ा पकड़ कर कहने लगा कि मेरी एक छोटी सी ज़रूरत बाकी रह गई है, मुझे डर है कि कहीं भूल न जाऊँ। आप (स0) उसके साथ तशरीफ ले गये और जब उसकी जरूरत पूरी हो गयी तो आप (स0) वापस तशरीफ लाए और नमाज़ अदा फरमाई।

आप (स0) के तहम्मुल, कुव्वते बर्दाश्त और सब्र व अ़ज़ीमत के वाकिआ़त में आपके खादिम हजरत अनस (र0) की वह शहादत है जो उन्होंने इस सिलसिले में दी है। उस वक्त वह बहुत कमसिन थे, उन्होंने कहा कि :

"मैं ने नबी करीम (स0) की दस साल खिदमत की, आप (स0) ने कभी "हुँ:" भी नहीं किया और न यह फरमाया कि फुलाँ काम तुम ने क्यों क्या या यह कि क्यों नहीं क्या?"

हजरत सुआ़द इब्ने उमर (र0) कहते हैं कि मैं रसूलुल्लाह (स0) के पास हाज़िर हुआ और मेरे कपड़े पर ज़ाफरान से मली हुई खुश्बू का निशान था, आप (स0) ने देखा तो फरमाया : फेंको, फेंको। और मेरे पेट पर एक छड़ी मारी जिस से मुझे हलकी चोट लगी, मैं ने कहा या रसूलल्लाह (स0) मेरा क़िसास का हक़ हो गया। तो आप (स0) ने अपने पेट से कपड़ा हटा दिया और फरमाया : क़िसास ले लो।

आप (स०) की तवाजुअ़ व इन्किसारी

आप (स0) बहुत ज्यादा मुतवाज़िअ़ थे, और आप किसी चीज़ में नुमायाँ और मुम्ताज़ होना पसन्द नहीं फरमाते थे, और न आप (स0) इस को अच्छा समझते थे कि लोग आप के लिए खड़े हों, या हद से ज्यादा आप की तअ़रीफ करें –जैसे पिछली उम्मतों ने अपने नबियों के साथ किया था– या

www.abulhasanalinadwi.org

आप को बन्दगी और रिसालत के दरजे से आगे बढ़ाएं। हजरत अनस (र0) फरमाते हैं कि हम को रसूलुल्लाह (स0) से ज्यादा कोई शख्स महबूब न था, लेकिन हम आप (स0) को देखते और इस खयाल से खड़े नहीं होते थे कि आप इस को पसन्द नहीं फरमाते थे।

आप (स0) से कहा गया ऐ मख्लूख में सब से अफज़ल! आप ने फरमाया यह हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम का मुक़ाम है।

हजरत उमर (र0) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (स0) ने फरमाया कि मेरी इस तरह आगे बढ़ा कर तअरीफ न करो जिस तरह ईसाइयों ने हजरत ईसा अलैहिस्सलाम के साथ किया था, मैं तो सिर्फ एक बन्दा हूँ, तुम मुझे अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल कहो।

हजरत अब्दुल्लाह इब्ने अबी औफा रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (स0) को इस में कोई तकल्लुफ और आ़र न होता था कि आप (स0) किसी गुलाम या किसी बेवा के साथ चलें, यहाँ तक कि उस की ज़रूरत पूरी हो जाए।

हजरत अनस (र0) कहते हैं कि मदीने की बाँदियों में से कोई आप का हाथ पकड़ लेती और जो कुछ कहना होता कहती और जितनी दूर चाहती ले जाती।

हजरत अ़दी इब्ने हातिम ताई (र0) जब आप (स0) की खिदमत में हाज़िर हुए तो आप (स0) ने उनको अपने घर बुलाया, बाँदी ने तकिया टेक लगाने के लिए पेश किया, आप (स0) ने उसको अपने और अदी के दरम्यान रख दिया, और खुद ज़मीन पर बैठ गये। हजरत अदी (र0) कहते हैं कि इस से मैं समझ गया कि आप बादशाह नहीं हैं।

हजरत अनस (र0) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (स0) बीमार की इयादत फरमाते थे, जनाज़े में शरीक होते थे, और गुलाम की दअ़वत कुबूल फरमाते थे।

हजरत जाबिर (र0) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (स0) कमज़ोर के खयाल से अपनी रफतार सुस्त फरमा देते थे और उसके लिए दुआ़ फरमाते थे।

www.abulhasanalinadwi.org

हजरत अनस (र0) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (स0) जौ की रोटी और ऐसे सालन पर जिसका मज़ा बदल चला हो, बुलाए जाते तो भी आप (स0) कुबूल फरमाते।

उन्हीं से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0) ने इरशाद फरमाया कि मैं बन्दा हूँ, बन्दे की तरह खाता हूँ और बन्दे की तरह बैठता हूँ।

हजरत अब्दुल्लाह इब्ने अम्र इब्नुलआस (र0) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (स0) मेरे यहाँ तशरीफ लाये, मैं ने चमड़े का तकिया जिस में छाल भरी हुई थी, आप (स0) को पेश किया, आप (स0) ज़मीन पर बैठ गये और तकिये को मेरे और अपने दरम्यान रख दिया।

रसूलुल्लाह (स0) खुद घर की सफाई फरमा लेते, ऊँट को बाँध लेते और अपने जानवर को चारा भी देते, अपने खादिम के साथ खाना खाते और आटा गूँधने में उसका हाथ बटाते, और बाज़ार से सौदा भी ले आते।

बहादुरी, दिलावरी और शर्म व हया

आप (स0) की सीरत में बहादुरी व दिलावरी और शर्म व हया एक जैसी पाई जाती थी, आप (स0) की हया के सिलसिले में हजरत अबू सईद खुदरी (र0) फरमाते हैं कि आप (स0) पर्दा नशीन कुँवारी लड़की से ज्यादा हयादार थे, जब आप (स0) को कोई चीज़ नागवार होती तो उसका असर आपके मुबारक चेहरे से ज़ाहिर हो जाता था, शर्म व हया की वजह से किसी के सामने ऐसी बात न कहते थे जो उसको नागवार हो, इस लिए यह काम किसी और के हवाले करते। हजरत अनस (र0) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (स0) की मज्लिस में एक व्यक्ति था जिसके कपड़े बिल्कुल पीले थे, चूँकि आप (स0) किसी के सामने ऐसी बात कहना पसन्द नहीं फरमाते थे जो उसको नागवार हो, इस लिए जब वह खड़ा हो गया तो आप (स0) ने लोगों से फरमाया कि अच्छा था अगर तुम उस से यह कहते कि पीले रंग का प्रयोग छोड़ दे।

हज़रत आइशा (र0) बयान फरमाती हैं कि जब आप (स0) को किसी की कोई बुराई मअ़लूम होती तो आप (स0) उसका नाम लेकर यह न फ़रमाते कि उसने ऐसा क्यों किया? आप यूँ फरमाते कि लोगों को क्या हो

www.abulhasanalinadwi.org

गया है कि वह ऐसा कहते या करते हैं, आप (स0) उसकी मुखालफत तो फरमाते लेकिन बुराई करने वाले का नाम ज़ाहिर न फरमाते।

बहादुरी व दिलावरी के सिलसिले में हज़रत अली (र0) की गवाही काफी है वह कहते हैं कि जब ज़ोर का रन पड़ता और मअ़लूम होता कि आँखें बाहर निकल पड़ेंगी तो उस वक्त हम रसूलुल्लाह (स0) की पनाह ढूँढते थे और यह देखते थे कि दुश्मन से आप (स0) से ज्यादा कोई क़रीब नहीं है। बद्र की जंग में हमारा यही हाल था, हम रसूलुल्लाह (स0) की पनाह ले रहे थे और आप (स0) दुश्मन से हम सब से ज्यादा क़रीब थे।

हजरत अनस (र0) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (स0) सब से ज्यादा हसीन व जमील, सब से ज्यादा सखी व फैयाज़ और सब से ज्यादा शुजाअ़ व बहादुर थे। एक रात मदीने वाले डर गये और जिधर से आवाज़ आई थी उधर लोगों ने रूख किया, रास्ते में रसूल (स0) वापस आते हुए मिले, आप आवाज़ सुनकर उन सब से पहले वहाँ पहुँच गये थे, आप (स0) फरमाते जाते थे कि डरो नहीं, डरो नहीं, आप (स0) उस वक्त हजरत अबू तलहा (र0) के घोड़े पर सवार थे, जिस पर ज़ीन भी न थी, और तलवार आप (स0) के कन्धे से लटक रही थी, आप (स0) ने घोड़े की तअ़रीफ करते हुए फरमाया कि मैंने उसको समन्द की तरह तेज़ रफ्तार पाया।

उहद और हुनैन की जंग में जब बड़े बड़े बहादुर और जिगर– दार तितर बितर हो गये थे और मैदान खाली था, उस वक्त भी आप (स0) उसी सुकून और साबित क़दमी के साथ अपने मकाम पर मौजूद थे, मअ़लूम होता था कि कोई बात ही नहीं हुई, आप यह कहते जाते थे : मैं नबी हूँ, यह कोई झूटी बात नहीं है, मैं अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ।

शफ्क़त व महब्बत और रहमते आ़ॅम

इस शजाअ़त व बहादुरी के साथ आप (स0) बेहद नर्म दिल थे, आपकी आँखें बहुत जल्द नम और तर हो जाती थीं, कमज़ोर लोगों और बेज़बान जानवरों तक के साथ आप (स0) नर्मी का हुक्म फरमाते थे।

हजरत शद्दाद इब्ने औस (र0) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (स0) ने फरमाया कि अल्लाह ने हर चीज़ के साथ अच्छा मुआ़मला करने और नर्म

www.abulhasanalinadwi.org

बरताव करने का हुक्म दिया है, इस लिए ज़बह भी करो तो अच्छी तरह करो, तुम में से जो ज़बह करना चाहे, वह अपनी छुरी पहले तेज़ करे और अपने ज़बीहे को आराम दे।

हजरत इब्ने अब्बास (र0) से रिवायत है कि एक आदमी ने एक बकरी ज़मीन पर ज़बह करने के लिए लिटाई, उसके बाद छुरी तेज़ करना शुरू किया, रसूलुल्लाह (स0) ने यह देख कर फरमाया : क्या तुम उसको दो बार मारना चाहते हो? उसको लिटाने से पहले तुम ने छुरी तेज़ क्यों न कर ली?

आप (स0) ने सहाबियों को अपने जानवरों को चारा पानी देने की हिदायत फरमाई और उनको परेशान करने और उनकी ताकत से ज्यादा बोझ लादने को मना फरमाया, और जानवरों की तकलीफ दूर करने और उनको आराम पहुँचाने को अज्र व सवाब और अल्लाह से क़रीब होने का ज़रिया बताया, और उसके फज़ाइल बयान फरमाये।

हजरत अबू हुरैरा (र0) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (स0) ने फरमाया एक शख्स कहीं सफर पर था, रास्ते में उसको सख्त प्यास लगी, सामने एक कुंवाँ नज़र पड़ा वह उसमें उतर गया, जब बाहर आया तो देखा कि एक कुत्ता प्यास की वजह से कीचड़ चाट रहा है। उसने अपने दिल में कहा कि प्यास से जो मेरा हाल हो रहा था, वही इसका भी है, वह फिर कुंवें में उतरा, अपने चमड़े के मोज़े पानी से भरे, फिर अपने दांतों से उनको दबाया और ऊपर आकर कुत्ते को पिलाया। अल्लाह ने उसके इस काम को कुबूल फरमाया और उसकी मग्फिरत फरमा दी। लोगों ने पूछा कि या रसूलल्लाह! जानवरों के मुआमले में भी सवाब है? आप (स0) ने फरमाया : हर उस मख्लूक़ में जो तर व ताज़ा जिगर रखती है, सवाब है।

हजरज अब्दुल्लाह इब्ने उमर (र0) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (स0) ने बयान फरमाया कि एक औरत को सिर्फ इस बात पर अज़ाब दिया गया कि उसने अपनी बिल्ली को खाना पानी नहीं दिया और न उसको छोड़ा कि वह कीड़े मकोड़ों से अपना पेट भर ले।

हजरत सुहैल इब्ने अम्र रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (स0) एक

www.abulhasanalinadwi.org

ऐसे ऊँट के पास से गुजरे, कमज़ोरी की वजह से जिसकी पीठ उस के पेट से लग गई थी, आप (स0) ने फरमाया : इन बेज़बान जानवरों के मुआमले में अल्लाह से डरो, इन पर सवारी करो तो अच्छी तरह, इनको ज़बह करके इनका गोश्त इस्तेमाल करो तो इस हालत में कि वह अच्छी हालत में हों।

हजरत अब्दुल्लाह इब्ने जाफर (र0) बयान करते हैं कि रसूलु–ल्लाह (स0) एक अन्सारी के एहाते में गये, उस में एक ऊँट था, उसने जब रसूलुल्लाह (स0) को देखा तो वह बलबलाने लगा और उसकी आँखों से आँसू बहने लगे, रसूलुल्लाह (स0) उसके करीब तशरीफ लाए और उसके कोहान और कनपटियों पर हाथ फेरा, उस से उसको सुकून हो गया, फिर आप (स0) ने पूछा कि इस ऊँट का मालिक कौन है? एक अन्सारी नौजवान आया और उसने कहा कि या रसूलल्लाह! यह मेरा है। आप (स0) ने फरमाया कि तुम इस जानवर के मुआमले में –जिसका मालिक अल्लाह ने तुम को बनाया है– अल्लाह से नहीं डरते, वह मुझ से शिकायत कर रहा था कि तुम उसको तकलीफ देते हो और हर वक्त काम में लगए रखते हो।

हजरत अबू हुरैरा (र0) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (स0) ने फरमाया कि अगर तुम किसी हरी भरी जगह जाओ तो ऊँटों को ज़मीन पर उनके हक़ से महरूम न करो, और अगर सूखी ज़मीन में जाओ तो वहाँ तेज चलो, रात को पड़ाव डालना हो तो रास्ते पर न डालो, इसलिए कि वहाँ जानवर चलते फिरते हैं और कीड़े मकोड़े वहाँ पनाह लेते हैं।

हजरत इब्ने मस्ऊद (र0) बयान करते हैं कि हम लोग रसूलुल्लाह (स0) के साथ एक सफर में थे कि आप (स0) एक ज़रूरत के लिए थोड़ी देर के लिए तशरीफ ले गये, इतने में हम ने एक चिड़िया देखी, उसके साथ दो बच्चे थे, हम ने दोनों बच्चे ले लिए, यह देख कर वह अपने परों को फड़फड़ाने लगी, आप (स0) तशरीफ लाए और पूछा कि किसने इसके बच्चे छीन कर इसको तकलीफ पहुँचाई है? फिर आप (स0) ने हुक्म दिया कि उसके बच्चे वापस करो। वहाँ हम ने चूँटियों की एक आबादी देखी और उसको जला दिया, आप (स0) ने फरमाया इसको किसने जलाया है? हमने कहा कि हम लोगों ने। आप (स0) ने फरमाया कि आग का अज़ाब देने का हक सिर्फ आग

www.abulhasanalinadwi.org

के रब को है।

नौकर, खादिम और मजदूर के साथ जो दूसरे इन्सानों की तरह इन्सान हैं और जिन का अपने मालिक और आक़ा पर एहसान है, आप (स0) ने अच्छे सुलूक की जो तालीम दी है, वह इसके एलावा है। हजरत जाबिर इब्नो अब्दुल्लाह (र0) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (स0) ने फरमाया कि जो तुम खाते हो वही उनको खिलाओ, जो तुम पहनते हो वही उनको पहनाओ, और अल्लाह की मख्लूक़ को अ़ज़ाब में न डालो, जिनको अल्लाह ने तुम्हारे मातहत किया है तुम्हारे भाई, तुम्हारे खादिम और मददगार हैं। जिस का भाई उसका मातहत हो उसको चाहिए कि जो खुद खाता है वही उसको खिलाए, जो खुद पहनता है वही उसको पहनाए, उन से ऐसा काम न लो जो उनकी ताकत से बाहर हो, अगर ऐसा करना ही पड़े तो उनका हाथ बटाओ।

हजरत अब्दुल्लाह इब्ने उमर (र0) फरमाते हैं कि एक आराबी रसूलुल्लाह (स0) के पास आया और पूछा कि मैं अपने नौकर को एक दिन मे कितनी बार मुआ़फ करूँ? आप (स0) ने फरमाया : कि 70 बार। वही बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (स0) ने फरमाया कि मज़दूर को उसकी मजदूरी उसका पसीना सूखने से पहले दे दो।

कामिल, आलमगीर और लाज़वाल नमूना

इस किताब के अन्त में हजरत मौलाना सैयद सुलैमान नदवी की मश्हूर किताब "खुतबाते मदरास" का एक पैरा पेश किया जा रहा है, जिस में सैयद साहब ने रसूलुल्लाह (स0) के कामिल, आलमगीर और लाफानी नक्शे हयात, आप (स0) की जामईयत व कामिलीयत और तमाम इन्सानी तबक़ों और हर माहौल, हर ज़माना, हर पेशा और हर काम, ग़रज़ हर किसम के हालात और हर सतह के लिए आप की कामिल रहनुमाई और उस्वा –ए– हसना की निहायत मुअस्सिर और बलीग़ अन्दाज़ में उसको बयान किया है।

वह लिखते हैं :–

"एक ऐसी जिन्दगी जो हर इन्सानी जमाअत और हर इन्सानी हालत के मुख्तलिफ मज़ाहिर और हर क़िस्म के सही जज़्बात और कामिल अख्लाक़ का मजमूआ़ हो, सिर्फ मुहम्मद रसूलुल्लाह (स0) की सीरत

www.abulhasanalinadwi.org

है। अगर तुम दौलतमंद हो तो मक्के के ताजिर और बहरैन के खज़ानेदार की तक़लीद करो, अगर तुम ग़रीब हो तो अबी तालिब की घाटी के कैदी और मदीने के मेहमान का हाल सुनो, अगर तुम बादशाह हो तो सुलताने अरब का हाल पढ़ो, अगर तुम रिआ़या हो तो कुरैश के महकूम को एक नज़र देखो, अगर तुम फातेह हो तो बद्र व हुनैन के सिपाह सालार पर निगाह दौड़ाओ, अगर तुम ने शिकस्त खायी है तो मारका –ए– उहद से इबरत हासिल करो, अगर तुम उस्ताद हो तो सुफ्फा के मुअल्लिम को देखो, अगर शागिर्द हो तो रूहुलअमीन (हजरत जिब्रईल अलैहिस्सलाम) के सामने बैठने वाले पर नज़र जमाओ, अगर तुम वाइज़ व नासेह हो तो मस्जिदे मदीना के मिम्बर पर खड़े होने वाले की बातें सुनो, अगर तुम तन्हाई और बेकसी के आलम में हक़ की आवाज़ लगाने वाले का फर्ज़ अन्जाम देना चाहते हो तो मक्का के बेयार व मददगार नबी का जिन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा तुम्हारे सामने है, अगर तुम हक़ की मदद के बाद अपने दुश्मनों को ज़ेर और अपने मुखालिफों को कमज़ोर बना चुके हो तो मक्का के फतह करने वाले का नज़्ज़ारा करो, अगर तुम अपने कारोबार और दुन्यावी तगो दौ का निज़ाम ठीक करना चाहते हो तो बनी नज़ीर, खैबर और फिदक की ज़मीनों के मालिक के कारोबार और उस के नज़्म व एहतिमाम को देखो, अगर यतीम हो तो अब्दुल्लाह और आमिना के जिगर के टुकड़े को न भूलो, अगर बच्चे हो तो हलीमा सअ़दिया के लाडले को देखो, अगर तुम जवान हो ता मक्के के एक चरवाहे की सीरत पढ़ो, अगर तुम सफरी कारोबार में हो तो बुस्रा के कारवाँ सालार की मिसालें ढूँढो, अगर तुम अदालत के क़ाज़ी हो और पंचायतों के पंच हो तो कअ़बे में नूरे आफताब से पहले दाखिल होने वाले पंच को देखो जो हजरे अस्वद को कअ़बे के एक गोशे में खड़ा कर रहा है, मदीने की कच्ची मस्जिद के सहन में बेठने वाले मुन्सिफ को देखो जिसकी नज़र में शाह व गदा और अमीर व ग़रीब सब बराबर थे, अगर तुम बीवियों के शौहर हो तो खदीजा और

www.abulhasanalinadwi.org

आइशा के मुकद्दस शौहर की जिन्दगी का मुताला करो, अगर तुम औलाद वाले हो तो फातिमा के बाप और हसन व हुसैन के नाना का हाल पढ़ो, ग़रज़ तुम जो कुछ भी हो और किसी हाल में भी हो तुम्हारी जिन्दगी के लिए नमूना, तुम्हारी सीरत की इस्लाह के लिए सामान, तुम्हारे ज़ुल्मतखाने के लिए हिदायत का चराग़ और रहनुमाई को नूर हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत व किरदार के खज़ाने में हर वक्त और हर हाल में मिल सकता है। इस लिए तमाम इन्सानी तबक़ों के हर तालिबे इल्म और नूरे ईमानी के हर तलाश करने वाले के लिए सिर्फ मुहम्मद (स0) की सीरत हिदायत का नमूना और नजात का ज़रिया है। जिसकी निगाह के सामने मुहम्मद (स0) की सीरत है, उसके सामने हजरते नूह व इब्राहीम, अय्यूब व यूनुस, मूसा व ईसा अलैहिमुस्सलाम सब की सीरतें मौजूद हैं, गोया तमाम दूसरे नबियों की सीरतें एक ही किस्म की दुकानें हैं और हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सीरत,अख्लाक़ व आमाल की दुन्या का सब से बड़ा बाज़ार है, जहाँ हर किस्म के खरीदार और चीज़ के तलबगार के लिए बेहतरीन सामान मौजूद है।"

www.abulhasanalinadwi.org